अंतरा-शब्दशक्ति

मैना की बैना

काव्य संग्रह

डॉ. लक्ष्मी कुशवाह

मैना की बैना

(काव्य संग्रह)

डॉ लक्ष्मी कुशवाह

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-28-5

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डॉ लक्ष्मी कुशवाह

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Maina ki Baina by 'Dr. Laxmi Kushwah'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

प्रिय साथियों

महिलाओं पर अत्याचार आज ही हुए होे तो ऐसा नहीं है । उन्हे सदियों से ही प्रताड़ित किया जाता रहा है। कभी मीरा को जहर पिला कर मारने की कोशिश की गयी, कभी सीता की अग्नि परीक्षा ली गयी ,कभी जबरन पति के मरने के बाद सती कर दिया या वह स्वयं सती हो गयीं । दहेज के नाम पर बली चढ़ा दी गयी। जहां लड़की के जन्म लेने पर ही मायूसी छा जाये। और उसे गीले तौलिये मे लपेट कर दम घोंट कर मार दिया जाये , या अफीम चटा कर मार दिया जाये ,कहीं मां को ही उस नन्हीं बच्ची को चारपायी के पाये के नीचे गला दबा कर मारने पर मजबूर कर दिया जाये, और तो और एक मा जब अपने जिगर के टुकड़े को कचरे के ढेर पर फेकने के लिये मजबूर हो जाये। छोटी-छोटी बच्चियां दुराचार की शिकार हो जाये ,उन्हे दलालो द्वारा हवस की पूर्ती हेतु बेच दिया जाये जहां बच्चों की खरीद फरोक्त करते अपराधियो के कलेजे नहीं कांपते। उन प्रताड़ित एवं लाचार महिलाओ के लिये, समाज के कमजोर लोगो के लिये सभी के दिल में संवेदनाये जागती है, क्रोध भी आता है क्या करें क्या घुट-घुट कर जिये कैसे बताये कि हम भी तुम्हारे गम में शामिल है तब बस अपने विचार व्यक्त करने का एक ही रास्ता दिखता है और वो है लेखन ।

लेखन अपने भावो को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है । एक महिला पुलिस अधिकारी होने के नाते विभिन्न जिलो में रही, तरह-तरह के लोगो से पाला पड़ा, कई तरह के अनुभव हुये, महिलाओ के दर्द को करीब से जाना, महिला थाने में तरह तरह के केस आये जिनमे से कुछ मेरे दिल में चुभन छोड़ गये। आंखो में नमी छोड़ गये, प्रश्न चिन्ह छोड गये आज आपके सामने मैना की बैना लेकर हाजिर हूं जो मैने महसूस किया कागज पर उतार दिया।

मैं आपसे एक बात कहना चाहती हूं कि मैं कोई बहुत बड़ी साहित्यकार नहीं हूं न ही शब्दो का जादू बिखेरना जानती हूं । मैं एक साधारण सी महिला हूं जो अपने आसपास घटित घटनाओ से आहत है द्रवित है। मेरे लेखन में कई कमियां भी होगी जिन्हें मै धीरे-धीरे दूर करने का प्रयास करूंगी। मै साधारण तरीके से ही अपने हृदय के भावो को व्यक्त करना चाहती हूं दिल में कई भाव उठे हैं, इस दर्द को अपनी लेखनी के माध्यम से इन पन्नो पर उतार दिया है।

मेरी कोई भी कविता किसी को भी आघात पहुचाने के लिये नहीं है और ना ही किसी व्यक्तिविशेष पर आक्षेप ही लगाती है और न ही किसी की भावनाओ को ठेस पहुचाने के लिये है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका सहयोग और स्नेह मुझे प्राप्त होगा जो मेरा मार्ग प्रशस्त करेगा।

धन्यवाद

डॉ लक्ष्मी कुशवाह

अनुक्रमणिका

1. मैना की बैना	5
2. छोटी-छोटी बातें	6
3. माँ	7
4. जियो जिंदगी	8
5. खुशियों की बहार	9
6. जिंदगी	10
7. रोशनी	11
8. मंजिल अभी बाकी है	12
9. हिम्मत	13
10.क्यों छुपाऊ	14
11.हौसला	15
12.बेटियां	16

मैना की बैना

बाबुल मै तेरे बागों की लाडली मैना थी,
फुदक-फुदक कर इधर-उधर डोला करती थी,
दाना-दुनका जो भी दे देता था
उसे मै चुपचाप चुग लिया करती थी।
पर तुझसे उठाया न गया मेरा नन्हा सा बोझ
और तूने पाली मुक्ति मुझे सैयादों को सौप
यहां मुझे पिंजरें मै बंद कर डाला है,
दाना दुनका भी किसी ने न डाला है
हमेशा जब तब सब डण्डी लिये
मार पीट किया करते हैं जानते है क्यों बाबा?
क्योंकि तुमने इन्हे सोने का पिंजरा नहीं दिया न!
मेरे गले में सोने की कण्ठी नहीं डाली न!
मै कहीं उड़कर तुम्हारे पास न चली आऊं बाबा
इसलिये मेरे पर भी काट डालें हैं,
मेरा शरीर जगह-जगह से घायल हो गया है
पिंजरे से टकरा टकरा कर
जाने क्यों दिन रात मुझे
रसोई में ही टांग कर रखा जाता है,
देखना एक दिन आग की लपट उठेगी
और तेरी यह मैना कोयला बन जायेगी
पर कटे हैं बाबा उड़ भी न सकूंगी
तेरे दिये लोहे के पिंजरे के साथ ही जल जाऊंगी।
इन्हें सोने का पिंजरा देदो न बाबा,
यह मुझे नहीं रखना चाहते,
कुछ दाने भी नहीं खिलाने चाहते।
केवल सोने का पिंजरा चाहिये इन्हें लादों न बाबा,
और मुझे यहां से ले जाओ
वरना स्टोव से लपट उठने ही वाली है ,
तेरी यह चिरैया जलने ही वाली है
तब रोकर क्या होगा जब मै ही न रहूंगी,
दर्द से छटपटाते सांसे ही तोड़ दूंगी।
इसलिये बाबा जरा जल्दि ही आना, जरा भी देर न लगाना,
मुझे जीवित ही ले जाना, मुझे जीवित ही ले जाना,.....

छोटी-छोटी बातें

हम क्यों छोटी- छोटी बातों पर रूठ जाते हैं
बेवजह क्यों जिंदगी के खुशनुमा पल गवांते हैं।
बीते पल फिर कभी लौटकर नहीं आते ।
जानते हैं फिर भी यह भूल जाते हैं
जोड़े ऊपर से ही बनकर आते हैं सब जानते हैं,
यहां बस वों गूंथे जाते हैं इसे भी मानते हैं,
सात जन्मों का यह बंधन बड़ा पावन कहलाता हैं,
इसके नूर से ही सारा परिवार जगमगाता है।
पीढ़ी दर पीढ़ी रिश्ते नाते परिवार बन निभते हैं
एकता की डोर में बधे हो तभी यह सुख देते हैं,
मानती हूं कभी कभी तूफान आया करते हैं
परिवार के रिश्ते हिचकोले खाया करते हैं
परिवार की बगिया के नर पौधो पर विशेष ध्यान दीजिये
उनकी जड़ों को हरपल संस्कारो से सींचिये
मजबूत हो गयी अगर पकड़ संस्कारो की
तो दुनिया की आंधियां भी कुछ न बिगाड़ पायेंगीं।

माँ

माँ किया बहुत उपकार ये तुमने
रख मुझको उदर में अपने
कितनी पीड़ा सही थी तुमने
दकियानूसी इस समाज में।
जन्म हुआ था जब मेरा
वहाँ न कोई खुशी मनी
सबके चेहरो पर मानो
मुर्दनी ही बिखर गयी।
क्यों ले गयी थीं तुम मुझको
ऐसे मनहूस गांव में
जहां बेटी की बलि चढ़ी थी
मुछों के इक ताव पे।
पगड़ी का तुर्रा झुके न
खानदान में कुड़ी बचे न
जाने कैसी रीत बनी थी
बारात न आये गांव में।
जब तुमने इन्कार किया था
मुझे अफीम चटाने को
पलंग का पाया तोड़ दिया था
तुमने मुझे बचाने को।
सुना था, सब तैयार खडे थे
मुझको वहां मार गिराने को
खोद लिया था गड्डा उनने
जिंदा मुझे दफनाने को।
घिरी हुयी थी मैं और तुम
उन खून के प्यासे अपनों में
चारों और से घेर लिया था
खूनी उन दरिंदों ने।
मां थी तुम, रौद्र रूप धर
रणचण्डी बन अड़ गयी
हाथ तेरे दरातीं देख ,
वो राक्षस सेना डर गयी
अनपढ़ घूँघट में रहने वाली
तुम मेरी ढाल बन गयी।
मेरी खातिर खूब लड़ीं तुम
माथे का घाव बतलाता है।

आ मां आज तेरे चरणों में
मन पल पल शीश नमाता है
जीवनदायिनी आज अश्रुझाड़ियों से
तेरे पैर पखारने को जी चाहता है।
वो रात घनेरी तुफान भरी थी
बरखा की लग रही झड़ी थी
तुझपे विपदा भारी पड़ी थी
अफीम चटा मेरी हत्या करनी थी।
तू फिर भी ले गयी वहां मुझे
बातो में आ जल्लादो की
ओ मेरी भोली मां तुझे
दगाबाजों से बचाने को जी चाहता है।
आसमान भी टूट के बरसे
दामिनी रह रह कर गरजे
सांय-सांय हवा चिल्लाये
पत्थरों के तीर चलाये।
ऐसे मै तू भाग गयी थी
मुझको लेकर बाहों मे
न मैं रोई न कुनमुनाई
अजीब नशा था अफीमों में।
अब समझी मैं, बिजली गरजे तो
क्यों थर थर कंप जाती हूं
सांय-सांय करती हवा से
डर के क्यों दुबक जाती हूं।
कौन है वो जो डरी सहमी सी
अक्सर सपनों में चली आती है,
तलवारें लिये लोगों से जान बचाने
दौड़ी-दौड़ी छुप जाती है।
तू नहीं जानती मां वो मनहूस रात
आज भी अवचेतन में जिंदा है
सारा सपना मेरा उस रात का ही फंदा है
मैं पूछती हूँ आज क्यों बलि चढ़े बेटी ही।
आ माँ आ आज ले चल मुझे वहां
इस जिंदा बेटी का अब उन्हे मुंह दिखा ,
हिसाब चाह क्योंकि अब मेरा
उन्हें मुहंतोंड जवाब देने को जी चाहता है।

जियो जिंदगी

इंसान हैं इसीलिये ईश्वर ने बख्शी है
हमें मुस्कुराहटों की संजीवनी बूटी
जो हर मर्ज का इलाज है ,
भुला देती हैं यादें कड़वी
तो फिर ,जी भर कर मुस्कुराइये,
जहां मौका मिले खिलखिलाइयें
मरने लगें हैं अगर रिश्ते तुम्हारे
तो उनमें थोड़ी गुदगुदी मचाइये
कुछ ही दिनों में वो फिर पुर्नजीवित होंगे
धीरे-धीरे मुस्कुराने लगेंगे
स्नेह में डूबे जगमगाने लगेंगे।
प्यार से लहराने लगेंगे।
अगर जिंदगी दब गयी है
जिम्मेदारियों के बोझ तले
हो गये है चेहरे बेनूर से
तो बस इसमें प्यारी सी
शरारतो का इत्र लगाइये
मेरा यह नुस्खा तो आजमाइये।
बड़े गम बिखरें हैं आसपास जानते है
पथरीले पथ हैं ये भी मानते हैं
हौसलाऐं ठोकरों से उनको हटाइये
छोटी-छोटी खुशियों को ढूंढ लाइये
बहुमूल्य हैं ये अखियों के खारे मोती
इन्हें यूहीं बेवजह तो न बहाइये।

खुशियों की बहार

हिंद की नारियों अब जगाना है तुम्हें अलख
वक्त आ गया है, निभाना है तुम्हे अपना फर्ज।
कम हो रहीं हैं तुम्हारी नस्लें दिन व दिन
खाली किये जा रहे हैं बेटियों वाले गर्भ
चीख चीख के कह रहा है देश का अनुपात
बेटियों पर लगायी जा रही है घात
वरना ये अंतर हरियाणा राजस्थान में न दिखता
वहां ब्याह के लिये कोई अपना टका न खरचता।
बस तुमसे है इतनी बिनती, बन जाना ढाल उसकी
गर्भ में पलती बच्ची जो पल पल है सिहरती
न जाने कब अचानक मार दी जायेगी
वो बेचारी तो चीख भी न पायेगी
स्वयं समझना तुम कीमत अपने मातृत्व की।
तब यह जान पाओगी कि तुम हो ताकत सृष्टि की।
दुध मुहीं बच्ची को उठा जब सीने से लगाओगी।
सारे जहां का सुकून एक ही पल में पाओगी।
सूनी रहेगी वरना घर,, आंगन ,फुलवारी
जिस घर न गूंजेगी बिटिया की किल्कारी ।
तब आंचल में हूक उठेगी, अंखियां भर आएंगी ।
पल पल उसकी यादें बहुत तड़पायेंगी।
तपते रेगिस्तान में, ठंडी छाव सी बेटियां।
मायके ससुराल में सेतु हैं बेटियां।
इन्हें प्यार से तो उठाईये, ये है नन्हीं सी बेटियां।
कलेजे से तो लगाइये गहरे सुकुन सी बेटियां।
बोझ नहीं हैं ये बस इतना जान लीजिये ।
कहां-कहां शिखरों पर परचम लहरा आई है बेटियां।
भविष्य के माथे पर गर्व का तिलक हैं बेटियां
इन्हें मत मिटाइये, आने दीजिये खुशियों की बहार हैं बेटियां।

जिंदगी

जिंदगी कभी जिंदादिली सी खिलखिलाती है,
जिंदगी कभी मायूस भी हो जाती है,
जिंदगी कभी किसी की यूहीं अचानक से,
जाने कब खुद की जिंदगी बन जाती है।
कभी नासूर बनके बहुत तड़पाती है,
कभी किसी को हमसफर बना,
साथ चलना चाहती है,
कभी मुसीबतो से घबरा के
साथ ही छोड़ जाती है,
जब तक समझना चाहो इसे,
तो रेत की मानिंद हाथों से फिसल जाती है।
कभी ठोकर खा खुद ही संभल जाती है,
और कभी छोटी सी ये जिंदगी ही
जीवन में बहुत कुछ सिखा जाती है।

रोशनी

भेड़ की खाल में भेड़िये अब छुप कर रहने लगे हैं,
इन्सानों के विश्वास का खून घूँट-घूँट पीने लगे हैं,
हुई शब तो दिल ने मुझसे कहा,
निकल मत घर से डर तो जरा,
छुप-छुपके खड़े हैं दुशासन यहां,
मत घूम बेखौफ ठहर तो जरा,
फिर भी हिम्मत से रहती हूं मैं ,
आयीं मुसीबतें तो लड़ती हूं मैं।
मत कतरो पंख मेरे सैयादो के डरे
उड़ने दो बस मुझे उन्मुक्त अंबर तले।
देखना कहां कहां परचम फहराऊंगी मैं।
नाम देश का चहूं ओर रौशन कर आऊगी मैं।
बस सबकी आंखों में सम्मान चाहिये मुझे
पाओ अकेली तो विश्वास चाहिये मुझे
तब ही खुद को सुरक्षित पाऊंगी मैं।
बैखौफ बाहर निकल पाऊंगी मैं।
बहुत मुशकिल भी नहीं है
ये करना किसी के लिये
सौंगंध उठाओ बस इतनी
किसी एक को बचाने के लिये
अरे पहल तो करो कर सकते हो तुम,
इस ओढ़े आवरण को हटा सकते हो तुम
क्योंकि,
संस्कार का एक छोटा दिया ही बहुत है
अंधकारमय मन मस्तिष्क में उजाला भरने के लिये।

मंजिल अभी बाकी है

माना कि आपने मंजिल पाली है,
पर यह न मानों कि वास्तव में,
मंजिल पाली है,
अभी बहुत सी मंजिले और तुम्हें पानी है,
जिंदगी तो अभी और भी बहुत आगे जानी है,
समय की कीमत तो जरूर पहचाननी है,
इसकी डोर बहुत मजबूती से थामनी है,
वरना इसने दौड़ लगानी है,
समय तो रेत की मानिंद है मुट्ठी बंद की,
और मंजिल हाथ से फिसल जानी है
मत आश्वस्त होकर बैठ जाना ऐ हिंद की नारियों,
प्रगति पथ पर अभी बहुत सी पताकाऐं लहरानी है।

हिम्मत

जिदगी की दुश्वारियों से,
डर के,
क्या यूंही बैठ जाऊं ?
विरान हो गयी है जिंदगी तो,
क्या मै न मुस्कुराऊं ?
आंधियों के थपेड़ों ने,
सख्त जान बना दिया है मुझको
कोई आइना नहीं हूं मैं कि,
टूट के बिखर जाऊं
अरे नारी हूं मै,हां नारी हूं मैं
अपने सम्मान की खातिर,
कभी चट्टान सी सख्त बन जाऊं,
कभी दावानल बन अपनी शक्ति दिखलाऊ़
फौलादी हौसले रखती हूं मैं
पहाड़ो से भी टकरा जाऊं
किसी सहानुभूति की जरूरत नहीं है मुझको
अपनी राह खुद ही बनाती जाऊ
चाहूं तो चांद पर परचम लहरा आऊं
चाहूं तो समंदर की तली छू आऊ ।
सुना तुमने नारी हूं मैं,
कहो तो फिर इतिहास लिख जाऊं।
कहो तो फिर इतिहास लिख जाऊं।

क्यों छुपाऊ

जिदगी के हादसों ने कुछ ऐसा बना दिया,
हंसते-मुस्कुराते मेरे जीवन में घुन लगा
दिया,
क्या दुर्दशा बना देता है समाज का आदमी
सदियों से सह रही है नारी उसकी बेरहमी।
सोचा था मैने,
न खुद हंसना हैं न हंसाना है किसी को,
खिलखिलाकर अब इस समाज की
नजरों में न आना है मुझको।
किसी अंधेरे कमरे में दुबक जाना है
मुझको।
पर फिर सोचा,
क्यों डर के, यूंही चुप चाप बैठ जाऊं मैं ?
वीरान है जिंदगी तो भी, क्यों न मुस्कुराऊं
मैं?
क्यों घुट-घुटकर जिऊं और,
तड़प-तड़प कर मर जाऊं?
खूूब सोचा मैने कि,
अपने अपमान को कैसे भूल जाऊं?
जो भी अत्याचार करते हो मुझ पर ,
उन जख्मों को क्यों छुपाऊ ?
क्यों न उन रिसते घावों पर खुद ही मल्हम
लगाऊं।
क्यों सहूं ये पीड़ा,
कहीं मार डालते हो कोख में मुझको,
कभी जहर दे देते हो ,
कभी कुल प्रतिष्ठा के नाम पर,
मेरा बध करते हो,
और कभी,
डाल देते हो बेदर्दी से तेजाब मुझ पर,
कभी दहेज के नाम पर जला देते हो,
कहीं चीर हरण करते हो मेरा,
कहीं कुत्तों से झुण्ड बना
मेरी अस्मत लूटते हो,

ओ समाज के ठेकेदारो,
मैं पूछती हूं तुमसे बताओ,
ये आस्तीनों के जहरीले सांप
आखिर पलते कहां हैं?
डसते हैं हमको, फिर छुप जातें है,
यही सफेदपोश नाग तो इन्हें पालते हैं
ऐसे माहौल में बताओ
मै, जाऊं तो कहां जाऊं?
फिर भी ,
अपनो की खातिर, हंसना और जीना होगा,
नहीं तो यह समाज उन्हें झिंझोड़ डालेगा ,
वर्षो तक याद दिला मेरी, तिल-तिल कर
मारेगा।
मै अपनो के चेहरों की हंसी मिटाऊ तो क्यों
मिटाऊं?
बस अब
नोचना होगा उनका मजबूत खोल,
चाहें सहना पड़े व्यंगात्मक बोल
मै अबला, कमजोर नारी हूं
यह सहानुभूति पाऊं तो क्यों पाऊं?
मेरे घायल
कंपकपाते, लड़खड़ाते कदम ही सही,
उठना है, मजबूती से और आगे बढ़ना है,
भले ही शैतानो के अट्हास,
कानों में पिघले शीशे उलटायें
धमकियों से चाहें कितना भी डरायें
अब उन गीदड़ भभकियों से डरूं तो क्यों
डरूं?
मुझे,
समेटना है शक्ति जगाना है हिम्मत
स्वयं में और अपने जैसे औरो में भी।
भले तूफान में हो कश्तियां पर डूबेगी नहीं।
मजबूत है ये नारियां टूटेगी नहीं,
ये आत्मविश्वास है मेरा इसे
डिगाऊ तो क्यों डिगाऊ।

हौसला

चंद पलों, दिनों की बात नहीं होती है,
जिंदगी कुछ कर गुजरने के जूनून में
लगातार गुजारना होती है,
द्रवित मन को भटकने से बचाना होता है,
तभी तो लोगो की मिसालें बनती है।
पाना चाहता है दिल तो बहुत कुछ
यूहीं सिंहरन भरी रातों से,
तपते हुये सूरज से,
बारिश की बौछारों से,
तूफानों के थपेडों से बच-बच कर,
पर यूंही कुछ हासिल नहीं होता
कठोर श्रम लगन, की जरूरत होती है,
डर, सिमट छुप के जो घर नहीं बैठते हैं,
अपनी नाकामयाबियों से जो सबक लेते है।
हौंसला लिये जो आगे ही आगे बढ़ते है।
मंजिलें चरागे भी तो उन्ही के रोशन होते हैं।
रहतें हैं मस्त मौला, मासूम बच्चों से निश्छल,
वादे जो जिंदगी से कर उन्हे निभाते हैं,
रहमतें खुद ही उन पर खुदा की बरसती हैं,
बाधाऐं, कंटक सब रास्तों की हटती है।
मायावी दुनियां से तो नहीं आते है ऐसे लोग,
जो दूसरों के लिये आदर्श बन जातें है,
मील का पत्थर साबित होते हैं वो
दुनिया को बहुत कुछ दे जाते हैं।
बस उन्हे ढूढने की जरूरत है साथियों ।
ऐसे लोग आप हम में से ही तो होते हैं।

बेटियां

बेटियां सदियों से ही कम थीं
या अब कम हुयी जाती हैं ?
टिकती नहीं हैं या दलालों,
तस्करो की भेंट चढ़ जातीं हैं ?
क्या बचती नहीं हैं बेटियां या अब
गर्भ में बचने नहीं दी जाती हैं ?

जगमगाने से पहले ही यह ज्योतियां,
कोख में ही क्यों अक्सर बुझा दी जाती हैं ?
सेतीं हैं प्यार से कोख में कुछ माह,
उस परी को और मार देती हैं।
राजी कैसे हो जाती है एक वर्तमान मां,
भविष्य की मां के खात्में की खातिर,..

लील ली जाती है एक मासूम जिंदगी
बेजा दबाव की खातिर।
ईश्वर की नेमते है बेटियां इन्हें न मिटाईये।
बिना भेद-भाव कर गले से लगाईये।
बोझ नहीं हैं ये बस इतना जान लीजिये ।
कहां-कहां शिखरों पर परचम लहरा आई है बेटियां।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. लक्ष्मी कुशवाह

जन्म - 02.01.1961

शिक्षा - बी.ए., एल.एल.बी., मास्टर डिग्री इन सोशल वर्क मास्टर डिग्री इन योग, रेकी प्राकृतिक चिकित्सा (एनडी)

पता - सी.आई पार्क व्यू, म.नं. 40, दामखेड़ा, कोलार रोड़, कोलार (भोपाल), मध्यप्रदेश

मो. नं. - 0755-2492031, 9893455127

संप्रति - उप पुलिस अधिक्षक, पुलिस मुख्यालय भोपाल।

विधा - मुक्त विधा

प्रकाशन 1. महिलाओं के प्रति अपराध एवं कानूनी प्रयास 2013,

2. अन्य कथा संग्रह में संकलित काव्य।

3. केस स्टडी 18 एवं अन्य कहानी संग्रह में संकलित कहानियां प्रकाशित।

उपलब्धियां सम्मान एवं पुरस्कार :-

1. भारत सरकार द्वारा प्रदत्त गोविन्दवल्लभ पंत पुरस्कार 2013 - महिलाओं के प्रति अपराध एवं कानूनी प्रयास के लिए। 2. राज्य स्तरीय कस्तूरबा गांधी पुरस्कार - 03 बार - महिलाओं एवं कमजोर वर्ग के प्रति संवेदनशील एवं त्वरित कार्यवाही हेतु। 3. सरोकार संस्था द्वारा प्रदत्त सशक्त साथी पुरस्कार।
4. सृजन शब्द शक्ति सम्मान वर्ष 2016,
5. काव्यांजली में 'कल आज और कल' कविता के लिए प्रथम पुरस्कार
6. साहित्य कलश इन्दौर (म.प्र.) द्वारा श्री एवं श्रीमती ईश्वर पार्वती अलंकरण, महिलाओं के प्रति अपराध एवं कानूनी प्रयास पुस्तक के लिए।
7. साहित्य गौरव सम्मान 2017 साहित्य समीर दस्तक द्वारा।
8. सखी गौरव सम्मान। 9. विशिष्ट साहित्य सम्मान 2018, सखी साहित्य परिवार गुवाहाटी, असम द्वारा।
10. डी.एस.पी. एवं उपनिरीक्षक के लिए केस स्टडी पर प्रशंसा पत्र।
11. कथा गौरव सम्मान। 12. हिन्दी दैनिक वर्तमान अंकुर देहली द्वारा।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-28-5
मूल्य 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क– ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com